सर्वेश्वर श्रीसीतारामाभ्यां नमः

बोधायनवृत्तिकारभगवत्पादश्रीपुरुषोत्तमाचार्यप्रणीता

श्रीबोधायनगीता

(श्रीमद्रामायणरहस्यम्)

शुकदेवं गुरुं नत्वा श्रीमद्व्यासं च राघवम् ।
रामायणरहस्यं हि सद्बोधाय ब्रवीम्यहम् ॥१॥

श्रीहनुमते नमः

जगद्गुरु श्रीरामानन्दाचार्याय नमोनमः

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यश्रीरामेश्वरानन्दाचार्यप्रणीत

प्रकाश

सीतारामसमारम्भां रामानन्दार्यमध्यमाम् ।
रामप्रपन्नगुर्वन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ॥

श्रीसम्प्रदाय के नवमें आचार्य वृत्तिकार श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी बोधायन (वि. पू. ५६९-३२०) जीसे उनके शिष्य श्रीगंगाधराचार्यजी (वि.पू. ४८९-२८९) जो श्रीबोधायनजी के उत्तराधिकारी दशवें आचार्य हैं के श्रीमद्रामायण के रहस्य विषयक प्रणिपात पूर्वक अति विनय के साथ जिज्ञासा करने पर सार संक्षेप रूप से वीशेक श्लोकों में उपदेश दिये हैं उन्ही का सर्व साधारण साधकों को सुलभ बोध हेतु अति संक्षिप्त प्रकार से प्रकाशित किया जा रहा है-

जिज्ञास्यः शास्त्रयोनिश्च श्रुत्यन्वितोऽखिलेश्वरः ।
जगत्सृष्ट्यादि कर्त्ता श्रीरामोब्रह्मपरात्परम् ॥२॥
उपायश्चाद्वितीयोऽस्ति रामप्राप्तौ विनिश्चितः ।
प्रारब्धनाशिनी नृणां श्रीरामशरणागतिः ॥३॥

मेरे आराध्य गुरुदेव श्रीशुकदेवाचार्यजी को साष्टाङ्ग प्रणिपात कर परम-दादा गुरु सर्वैश्वर्यशाली श्रीव्यास मुनिजी को सादर प्रणिपात करता हूँ । अनन्तर सर्वाराध्य सर्वेश्वर श्रीयुत राघवजी को साष्टाङ्ग दण्डवत प्रणाम करके सभी साधकों के यथार्थ बोध हेतु श्रीमद्रामायण का रहस्य कहता हूँ ॥१॥

सभी साधकों से सायुज्य मुक्ति हेतु जिज्ञास्य जानने योग्य शास्त्र योनि-सभी वेदादि शास्त्र प्रमाणों से प्रमाणित यानी श्रीरामजी हैं इसको प्रमाणित करने के लिये श्रुति आदि शास्त्र ही प्रबल एवं प्रथम प्रमाण हैं प्रत्यक्ष तथा अनुमान वेदादि के वाद प्रमाण रूपसे ग्रहण किये जाते हैं एवं जिनमें सभी श्रुतियाँ समन्वित होती हैं ऐसे संसार की सृष्टि पालन एवं संहारों के कर्ता परात्पर ब्रह्म सर्वेश्वर अखिलेश्वर श्रीरामजी हैं अन्य नहीं ॥२॥

रहस्य शास्त्रों द्वारा सुनिश्चित श्रीराम प्राप्ति के लिये अद्वितीय मनुष्यों के प्रारब्ध कर्म का भी नाश करनेवाली सर्वेश्वर श्रीरामशरणागति ही उपाय है अन्य कोई नहीं ॥३॥

प्राप्यं श्रीरामकैङ्कर्यं श्रीरामप्राप्तिपूर्वकम् ।
पुरुषाकारसाहाय्यात् प्रपत्त्या प्राप्यते हि तत् ॥४॥
आदर्शव्यवहारो हि ज्ञायते रामवृत्ततः ।
मात्रा पित्रा सह भ्रात्रा मित्रामित्रैश्च देशिकैः ॥५॥
प्रपन्नरक्षकत्वस्य वात्सल्यादेश्च पूर्णता ।
उक्ता रामायणे श्रीमत्सीतारामचरित्रतः ॥६॥

जीवात्माओं से प्राप्य सर्वेश श्रीरामजी के प्राप्ति पूर्वक श्रीराम कैंकर्य ही है अन्य नहीं वह पुरुषाकार स्वरूपा सर्वेश्वरी श्रीसीताजी की सहायता से प्राप्य प्रपत्ति से प्राप्त होता है ॥४॥

श्रीमद्रामायण में वर्णित सर्वेश श्रीरामजी के चरित से माता के साथ पिता के साथ भाई के साथ आचार्य के साथ एवं मित्र तथा शत्रु के साथ कैसा आदर्श व्यवहार होना चाहिये यह पूर्णतः जाना जाता है यानी सभी के साथ आदर्श व्यवहार की शिक्षा श्रीरामचन्द्रजी के चरित्र से मानव को प्राप्त होता है ॥५॥

षडैश्वर्य सम्पन्न सर्वेश्वरी श्रीसीताजी एवं षडैश्वर्यशाली परेश श्रीरामजी के चरित से जगदाधार युगल किशोरों में प्रपन्न शरणागत जन रक्षकता की पूर्णता-पाराकाष्ठा-अन्तिम सीमा और वात्सल्य औदार्य प्रभृति गुणों की पूर्णता श्रीमद्रामायण में वर्णित है ॥६॥

आचाराल्लक्ष्मणस्याथ ज्ञापिता रामशेषता ।
श्रीरामाधीनता सम्यग् व्यक्ता भरतवृत्ततः ॥७॥
श्रीमद्भागवताधीनतोक्ता शत्रुघ्नवृत्ततः ।
अनन्यगतिकत्वं च प्रपन्नेऽपेक्षितं खलु ॥८॥
विभीषणजयन्तादेर्वृत्तात्तदवगम्यते ।
रक्षकत्वविहीनत्वं भ्रात्रादौ गम्यते च तत् ॥९॥

श्रीमद्रामायण के प्रधान पात्र श्रीलक्ष्मणजी के आचरण से समस्त जीवों में सर्वेश्वर श्रीराम शेषता यानी शेष-शेषीभाव-श्रीरामचन्द्रजी शेषी एवं जीव मात्र शेष हैं यह ज्ञापित-बोधित होता है। तथैव प्रधान पात्र श्रीभरतजी के चरित से जीवात्माओं की सर्वतोभाव से भगवान् श्रीरामजी के अधीनता-श्रीराम परतन्त्ररूप व्यक्त-बोधित होता है ॥७॥

श्रीमद्रामायणीय प्रधान पात्र श्रीशत्रुघ्नजी के चरित्र से श्रीरामचन्द्रजी के अनन्य भक्त के अधीनता साधकजनों को वतलाई गई है। प्रपन्न जनों को अनन्य गतिकता यानी स्व आराध्यदेव में सन्देह रहित पूर्ण निष्ठा होनी चाहिये यह श्रीविभीषणजी एवं श्रीजयन्त के चरित से जाना जाता है इससे यह भी ज्ञात होता है कि सर्वेश्वर श्रीरामजी के विना भाई माता पिता आदि में रक्षकपना-रक्षण सामर्थ्य नहीं है ॥८-९॥

भगवत्प्रतिपत्तौ च मुख्यो हेतुर्हि देशिकः ।
इत्येतदवबोद्धव्यं श्रीमन्मारुतिवृत्ततः ॥१०॥
कथिता रामगीता हि रामेण भरतं प्रति ।
साररूपतया बोध्या श्रीमद्रामायणस्य सा ॥११॥
वृत्ताभ्यामवगन्तव्यं रावणकुम्भकर्णयोः ।
अहन्ताममतादीनां स्वरूपं हि विरोधिनाम् ॥१२॥
निरासाग्रहणाभ्यां हि जावालिवचसस्तथा ।
अग्राह्यं च निरास्यं चासच्छास्त्रोक्तं प्रबोधितम् ॥१३॥

श्रीरामशरणागति में मुख्य कारण आचार्य होते हैं उनके विना प्रपत्ति सम्भव नहीं यह तत्त्व श्रीमान्-षडैश्वर्यशाली श्रीमरुतनन्दनजी के चरित से साधकों को अवबोध करना चाहिये ॥१०॥

सर्वेश्वर श्रीरामजी ने श्रीभरतजी को श्रीमद्राम गीता का सार रूपसे अति संक्षिप्त बीज के रूप में उपदेश दिया है वह श्रीमद्रामायण का संक्षिप्तसार है ऐसा जानना चाहिये । यह श्रीमद्रामगीता महाभारतीय श्रीकृष्णार्जुन सम्बादात्मक गीता का बीज है । इस विषय में स्वतन्त्राध्ययन-समालोचना अपेक्षित है अतः अन्य निबन्धों में देखें ॥११॥

अहंता-अहंकार ममता आदि सायुज्य मोक्ष प्राप्ति के हेतु विरोधि का स्वरूप रावण एवं कुम्भकर्ण के वृत्तों-चरितों से साधकों को भलिभाँति समझ लेना चाहिये ॥१२॥

श्रीजावालिजी के वचनों का श्रीरामजी के द्वारा मर्यादा

प्रपन्नावासदेशो हि प्रोक्तः कोशलवृत्ततः ।
उक्तो रामायणेनाथ गायत्र्यर्थविनिर्णयः ॥१४॥
उत्तरेण चरित्रेण श्रीरामस्यावतारिणः ।
वर्णितं पूर्णरूपेण चावतारस्य कारणम् ॥१५॥
भक्तिदानं च लोकेभ्यः सद्धर्मस्थापनं तथा ।
रामायणे हि सम्प्रोक्तं श्रीवाल्मीकिमहर्षिणा ॥१६॥

पूर्वक निरास एवं अस्वीकार से असत् शास्त्र के कथन का निरास तथा अग्राह्यता का बोधन किया गया है ॥१३॥

कोशल प्रदेश के वृत्तान्त-वर्णन से श्रीरामप्रपन्न-शरणागत जनों के आवास देश का कथन है। चौवीश हजार श्लोक वाले श्रीमद्रामाण से ब्रह्म गायत्री का वास्तविक अर्थ का निर्णय कर कहा है कि गायत्री मन्त्र प्रतिपाद्य श्रीराम तत्त्व है अन्य नहीं । विशेष ज्ञानार्थ मेरा "**गायत्री मन्त्र में श्रीरामत्त्व**" निबन्ध का अनुसन्धान करें ॥१४॥

श्रीमद्रामायणीय उत्तर काण्ड के चरित से "**सर्वेषामवताराणामवतारीरघूत्तमः**" इस आगम से बोधित सभी अवतारों के अवतारी सर्वेश्वर श्रीरामजी के विविध अवतारों के कारणों को पूर्ण रूपसे वर्णन किया गया है ॥१५॥

लोक-समस्त साधक जनों को श्रीराम सायुज्य प्रदान करनेवाली भक्ति का प्रदान करना तथा सनातन वैदिक

रामवद्वर्तितव्यं हि कदाचिन्न दशास्यवत् ।
स्वेन सार्धं कुलस्यात्र नो चेन्नाशो भविष्यति ॥१७॥
यान्ति न्यायसहायस्य सर्वेऽप्यत्र सहायताम् ।
अन्यायं समवाप्तं तु स्वीयो भ्राताऽपि मुञ्चति ॥१८॥

सद्धर्म का संस्थापन करना सर्वावतारी श्रीरामचन्द्रजी के अवतार का प्रयोजन महर्षि श्रीवाल्मीकिजी ने श्रीमद्रामायणजी में यथार्थ रूपसे वर्णन किया है ॥१६॥

श्रीमद्रामायण का एक रहस्य भूतोपदेश साधकों के लिये यह है कि मनुष्यों को सर्वेश्वर श्रीरामजी का जैसा व्यवहार सभी के साथ करना चाहिये पर कभी भी दशास्य के जैसा व्यवहार नहीं करना यदि प्रमादवश रावण सा व्यवहार हुआ तो अपने नजर के मसक्ष में ही अपने साथ ही कुल का नाश हो जायगा उसे कोई नहीं वचा पायेगा ॥१७॥

न्याय धर्म के अबलम्बनकर चलने वालों के लिये इस लोक में सभी प्राणि वर्ग सहायक होते हैं जैसे न्याय धर्म प्राण मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामजी के हेतु मनुष्य तो क्या सामान्य योनिवाले वन्दर भालू गीध आदि सहायक हुये । अन्याय-अधर्माचरण वाले को तो अपने सहोदर भाई भी छोड़ देता है जैसे धर्माचार विरोधी रावण को श्रीविभीषणजी त्याग कर न्याय-धर्मरूप श्रीरामशरणापन्न हुये ॥१८॥

इत्येवं सदसन्मार्गदर्शकत्वेन सम्मते ।
रामरावणयोर्वृत्ते रामायणे सुवर्णिते ॥१९॥
बोधायनेन सम्प्रोक्ता गीता गङ्गाधरं प्रति ।
जनानां पठतां भूयादज्ञानस्य विनाशिनी ॥२०॥

एवं पूर्व वर्णित प्रकार से श्रीरामजी के चरित से सन्मार्ग दर्शन एवं रावण के चरित से असत् मार्ग दर्शन के रूपमें सम्मत श्रीमद्रामायण में महर्षि श्रीवाल्मीकिजी ने सर्वेश्वर श्रीरामजी का तथा रावण के चरित्र का यथार्थ रूपमें वर्णन किया है उन चरितों के अनुसन्धान द्वारा साधकों को अपना सत् लक्ष्य निर्धारित कर श्रीराम सायुज्य प्राप्त करलेना चाहिये ॥१९॥

रहस्य जिज्ञासु स्व शिष्य श्रीगंगाधराचार्यजी के प्रति महर्षि श्रीपुरुषोत्तमाचार्यजी बोधायन द्वारा कथित-उपदिष्ट श्रीबोधायनगीता-श्रीमद्रामायण रहस्य श्रद्धा से पाठ करनेवाले जनों के अज्ञान का नाश करनेवाली हो ॥२०॥

आनन्दभाष्यसिंहासनासीन

जगद्गुरुश्रीरामानन्दाचार्यश्रीरामेश्वरानन्दाचार्यप्रणीत

प्रकाश

卐 श्रीरामः शरणं मम 卐